



भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान भुवनेश्वर Indian Institute of Technology Bhubaneswar

प्रेस विज्ञप्ति

ग्लेशियल लेक आउटबर्स्ट फ्लड (जीएलओएफ) शमन के लिए राष्ट्रीय ग्रैंड चैलेंज में आईआईटी भुवनेश्वर पुरस्कृत

भुवनेश्वर, 3 मार्च 2025: एक महत्वपूर्ण उपलब्धि में, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) भुवनेश्वर ने इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के अनुसंधान पहल के तहत सी-डैक (उन्नत कंप्यूटिंग विकास केंद्र), तिरुवनंतपुरम द्वारा हाल ही में संपन्न हिमशील्ड 2024 ग्रैंड चैलेंज में दूसरा उपविजेता स्थान हासिल किया है। प्रतियोगिता का उद्देश्य ग्लेशियल लेक आउटबर्स्ट फ्लड (जीएलओएफ) शमन के लिए अभिनव और टिकाऊ स्वदेशी समाधान विकसित करना था।

आईआईटी भुवनेश्वर के डॉ. आशिम सत्तार, डॉ. सुदीप्त साहा, डॉ. देबज्योति विश्वास, अभिनव ए, कट्टामुरी मोहन कृष्णा, कार्तिक चेरुकुरी की क्रायोसेंस टीम को राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के अवसर पर एक ट्रॉफी और 2 लाख रुपये का नकद पुरस्कार मिला। पुरस्कार समारोह की अध्यक्षता सुश्री सुनीता वर्मा, वैज्ञानिक जी और समूह समन्वयक, अनुसंधान एवं विकास, एमईआईटीवाई ने की। डॉ. कलाई सेलवन ए, निदेशक, सी-डैक, तिरुवनंतपुरम, श्री। इस अवसर पर एमईआईटीवाई के सीसीए अरविंद कुमार उपस्थित थे।

आईआईटी भुवनेश्वर टीम (क्रायोसेंस) ने अपना अभूतपूर्व समाधान प्रस्तुत किया, "जीएलओएफ ईडब्ल्यूएस: ग्लेशियल झीलों पर लोरा आईओटी उपकरणों की तैनाती और एकीकरण और एक एंड्रॉइड ऐप के माध्यम से जीएलओएफ चेतावनी का प्रसार।" यह परियोजना जीएलओएफ घटनाओं के लिए प्रारंभिक चेतावनी प्रणालियों (ईडब्ल्यूएस) के लिए एक अग्रणी दृष्टिकोण प्रदान करती है, जो ऐसी आपदाओं के प्रति संवेदनशील समुदायों की सुरक्षा के लिए अत्याधुनिक तकनीक का लाभ उठाती है।

टीम का नेतृत्व आईआईटी भुवनेश्वर के सहायक प्रोफेसर डॉ. आशिम सत्तार ने किया, जो भारत और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर जीएलओएफ के अग्रणी विशेषज्ञों में से एक हैं। परियोजना के महत्व पर टिप्पणी करते हुए, डॉ. सत्तार ने कहा, "अब जीएलओएफ शमन की दिशा में काम करने और जीएलओएफ-उजागर समुदायों और बुनियादी ढांचे के लचीलेपन के निर्माण में नवीनतम तकनीक को एकीकृत करने का समय आ गया है।" डॉ. सत्तार आईआईटी भुवनेश्वर में ग्लेशियर के खतरों और जोखिम को कम करने की दिशा में काम करने के लिए समर्पित "क्रायोसेंस लैब" का नेतृत्व कर रहे हैं।

यह परियोजना हिमनद झीलों की निगरानी और संभावित बाढ़ जोखिमों पर वास्तविक समय डेटा प्रदान करने के लिए लोरा आईओटी उपकरणों का उपयोग करने पर केंद्रित है। यह डेटा एक मोबाइल एंड्रॉइड एप्लिकेशन के माध्यम से प्रसारित और संसाधित किया जाता है, जो संबंधित हितधारकों को जीएलओएफ घटना की संभावित घटना के बारे में सचेत करता है। इंटरनेट ऑफ थिंग्स (IoT) का लाभ उठाकर, सिस्टम आपदा जोखिमों को कम करने के लिए अलर्ट का समय पर प्रसार सुनिश्चित करता है।

यह उपलब्धि वास्तविक दुनिया की समस्याओं को हल करने की दिशा में प्रौद्योगिकी को लागू करने की आईआईटी भुवनेश्वर की प्रतिबद्धता को दर्शाती है। इस उच्च प्रभाव वाली परियोजना के माध्यम से संस्थान का नवाचार, स्थिरता और लचीलेपन पर ध्यान एक बार फिर साबित हुआ है, जिसमें दुनिया भर में जीएलओएफ शमन प्रयासों को बदलने की क्षमता है।
